ब्रिटेन में दबाव समूह - ब्रिटेन में दबाव समूहों का विकास उन्नीसवीं शताब्दी के सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप हुआ है। ब्रिटेन में दबाव के प्रकार -

(1) व्यापारिक समूह - ब्रिटिश उद्योग मंडल, व्यापार मंडल, निर्माता संघ प्रमुख हैं।

(2) श्रमिक संगठन - परिवहन कामगार संघ, रेल कर्मचारी संघ, खान कर्मचारी संघ, बिजली व्यापारी संघ प्रमुख हैं।

(3) पेशागत संगठन - ब्रिटिश चिकित्सा संघ, सरकारी कर्मचारी संघ, राष्ट्रीय शिक्षक संघ, स्थानीय पदाधिकारी संघ

(4) अन्य संगठन - शिक्षा विकास परिषद, जानवरों के प्रति कठोरता निषेध संघ, बच्चों के प्रति कठोरता निषेध संघ, ब्रिटिश मानवतावादी संघ, परिवार नियोजन संघ, समाज सेवा राष्ट्रीय परिषद इत्यादि।

भूमिका - ब्रिटेन में दबाव समूह नीति निर्माण प्रक्रिया पर दबाव डालते हैं नकि नीति क्रियान्वयन। यह संसद की अपेक्षा प्रशासकीय विभागों और समितियों के माध्यम से काम करते हैं। के.सी. व्हीयर ने कहा है - "शायद ही ऐसा कोई कार्य होगा जिसपर कोई समिति उपदेश के बिना संघ, हित समूह अथवा प्रभावक गुट के प्रतिनिधियों के परामर्श से काम करती होगी।"

अमेरिका में दबाव समूह — डी टॉकविल के अनुसार "विश्व के किसी भी देश में संघ के सिद्धान्त को उतनी सफलता के साथ अधिकाधिक वस्तुओं के सम्बन्ध में लागू नहीं किया गया है जितना अमेरिका में।" अमेरिका में दबाव समूहों की संख्या सबसे ज्यादा है। ई० एस० ग्रिफिथ (E. S. Griffith) ने अमेरिकी दबाव समूहों को चार वर्गों में रखा है —

(1) व्यापारिक समूह — वाणिज्य मण्डल, निर्माताओं का राष्ट्रीय संघ, राष्ट्रीय कोयला संघ, राष्ट्रीय वाणिज्य संघ इत्यादि।

(2) कृषि समूह — अमेरिकी फार्म ब्यूरो संघ, राष्ट्रीय कृषक संघ इत्यादि।

(3) व्यावसायिक समूह — अमेरिकी बैंकर्स संघ, मेडिकल एसोसियेशन, वकील संघ, राष्ट्रीय शिक्षा संघ इत्यादि।

(4) श्रमिक संघ — अमेरिकी श्रम संघ, औद्योगिक संघ इत्यादि।

इसके अतिरिक्त अमेरिका में धार्मिक संघ तथा सार्वजनिक सेवा संघ भी प्रमुख हैं।

भूमिका — अमेरिका में दबाव समूह, दलों के साथ मिलकर शासन पर सक्रिय दबाव डालते हैं। डी० एफ० वर्मन ने कहा है — "अमेरिका के काँग्रेस के सदस्य, विशेषकर प्रतिनिधि सभा के सदस्य दबाव-समूहों के पॉकेट में रहते हैं।" ये लॉबीइंग का पूर्ण उपयोग कर न्यायपालिका को भी प्रभावित करने का प्रयास करते हैं, ये सरकार पर दबाव ही नहीं डालते वरन् अपने हित के लिए कार्य भी करते हैं तथा उम्मीदवारों के मनोनयन के स्तर पर इनका प्रभाव होता है।